MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-04 January to March 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

26) संत साहित्य में संत नामदेव का योगदान
प्रा. डॉ. रामकृष्ण बदने, जि. नांदेड ||108

27) हिंदी–मराठी दलित आत्मकथाओं की तुलना
प्रा.डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे & वसंत हिरामण लामतुरे, जि. लातुर ||110

28) सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि...
दिनेश कुमार जैन & डा. प्रकृति जेम्स, बिलासपुर ||113

29) स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यथा-कथा को बयान करती दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें
संतोष नागरे, जि. बीड ||120

30) वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक–शिक्षा की पाठ्यचर्या एवं शान्ति शिक्षा
अश्विनी कुमार पाठक & प्रोफेसर एन॰पी॰मोक्ता, गोरखपुर ||123

31) युग की संभावनाओं को साकार करनेवाला खण्ड काव्य प्रार्थना पुरुष
यम. राज्य लक्ष्मी, वरंगल ||130

32) वर्तमान संदर्भ में बाल साहित्य
डॉ. विजयकुमार रोडे, पुणे ||133

33) पर्यटन की भूमिका और प्रभाव : मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन की पहल पर एक केस...
कपिल साहू ||137

34) किन्नर समुदाय एवं कार्य
मो. जावेद शेख, मुंबई ||143

35) भारतीय समाज में नारी का स्थान
डा. एस. शर्मिली, एस के युनिव्हर्सिटी ||145

36) स्त्री जीवन के परतों को खोलती उपन्यास कृति: एक पत्नी के नोट्स
सारिका ठाकुर, औरंगाबाद, बिहार ||150

37) शिक्षिकाओं में व्याप्त भूमिका संघर्ष तथा उससे उत्पन्न समस्याएं (अल्मोड़ा नगर के ...
श्रीमती राखी किशोर & डा॰ रेनू प्रकाश, अल्मोड़ा ||151

38) मूल्य विकासपरक शिक्षा की नैतिक जिम्मेदारी
अखिल चमोली & हिमांशु बहुगुणा, चमोली ||157

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

शिक्षा में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग एवं सम्प्रेषण दक्षता का विकास, मेरठ आर. लाल बुक डिपो।

चौहान ज्योत्सना, अग्रवाल ओ.पी. (२०१८): सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की महत्वपूर्ण समझ आगरा, अग्रवाल प्रकाशन

दिघस्कर श्रुति (२०१०): मल्टीमीडिया उपागम के प्रयोग का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन लघुशोध गु.वा. वि.वि.

नायर कु. विनीता एस०(२००४): बिलासपुर नगर के माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन गु.वा. वि.वि.लघुशोध प्रबंध

आर.एन. विवेदी, शुक्ला डी.पी रिसर्च मैथोडोलॉजी कॉलेज बुक डिपो जयपुर

श्रीवास्तव रिमिता (२०१६): कम्प्यूटर एवं संचार तकनीकी आगरा, अग्रवाल प्रकाशन

शर्मा पायल (२००९) : शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग का अध्ययन डॉ. सी.व्ही० रमन वि.वि. कोटा बिलासपुर लघुशोध प्रबंध

वर्मा प्रीति, श्रीवास्तव डी.एन. (१९९४): मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यकी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

□□□

29

स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यथा-कथा को बयान करती दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें

संतोष नागरे
सहा.प्रा., हिन्दी विभाग,
र.भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई, जि. बीड

उर्दू से हिंदी में आयातित ग़ज़ल विधा को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाने में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', त्रिलोचन शास्त्री, शमशेर बहादुर सिंह, अदम गोंडवी, कुंअर बेचैन आदि का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ग़ज़ल का अर्थ है- 'प्रेमिका से वार्तालाप'। दुष्यंतकुमार ने 1975 में प्रकाशित अपने ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' के माध्यम से ग़ज़ल को हुस्न-इश्क के परम्परावादी क्षेत्र से बाहर निकालकर आम-आदमी की पीड़ा को बयान करने का सशक्त माध्यम बनाया। हिंदी ग़ज़ल का कायाकल्प करने में दुष्यंतकुमार के अमूल्य योगदान को अधोरेखित करते हुए डॉ.विश्वनाथ तिवारी कहते हैं,- "इन ग़ज़लों की जमीन इश्क की नहीं, राजनीति और आज के यथार्थ की जमीन है। इन ग़ज़लों में प्याला, शराब और साकी की जगह आज का तड़फड़ाता, छटपटाता आदमी है, उसकी जिन्दगी है, उसकी सच्चाई है, उसकी भूख है, उसकी इच्छा है, उसका भय है, वह भय- पूरा आदमी है- यातनाएँ झेलता हुआ। भूखे, नंगे, बेघर, बेजुबान लोगों की पीड़ा को दुष्यंतकुमार ने अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया है।"[1] 'साये में धूप' की 52 ग़ज़लें हिंदी काव्य की अमूल्य धरोहर है। जिसमें आजादी के पश्चात का समसामयिक परिवेश प्रतिबिंबित हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यथा-कथा को बयान करती दुष्यंतकुमार की ग़ज़लों के संदर्भ में डॉ. पद्मा पाटील कहती हैं,- "दुष्यंतकुमार की ग़ज़लों में जो आग है, जो सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रुपताओं को ध्यान से देखकर और समाज के बीच रहकर उसमें पूर्ण रुप से पचक रही है। इसी पचक का अविष्कार 'साये में धूप' में तबदील हुआ है।"[2]

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं समाज परिवर्तन के पथ पर छाये अंधकार को दूर करनेवाली चेतना की मशाल भी है।

Scanned with CamScanner

दुष्यंतकुमार की गज़लें समसामयिक यथार्थ जीवन की एक्स-रे है। दुष्यंतकुमार की गज़लें। आजादी के पश्चात व्यवस्था द्वारा छले और ठगे गए पंचित, दलित, वंजित, छलित का आरोप-पत्र है। कांतिकुमार जैन इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "दुष्यंत की गज़लों के कथ्य को सामाजिक या राजनीतिक कहना उतना ठीक नहीं है जितना यह कहना कि वह प्रतिष्ठान के अन्याय और अत्याचार के विरुध्द है। यह प्रतिष्ठान कोई भी हो सकता है। प्रतिष्ठान में जहां कहीं भी जंग लगी हुई है, दुष्यंत की गज़लें उसे दूर करने के लिए रेगमाल के काम में लाई जा सकती है। दुष्यंत की गज़लें प्रतिपक्ष का बयान है, पंचित, दलित, वंजित, छलित का आरोप-पत्र। हिंदुस्तान में आजादी के बाद व्यवस्था के विरुध्द असंतोष इतना व्यापक हो गया है, छले और ठगे जाने का अहसास इतना तीव्र होने लगा है कि दुष्यंत की गज़लों के शेर राह में पड़े पत्थरों की तरह हर वक्त आसानी से पथराव के काम आ सकते हैं।"[3] आजादी के पश्चात का मोहभंग, राजनेताओं की चरित्रहीनता, मूल्यों का पतन, आपातकाल, आर्थिक-सामाजिक विषमता, धार्मिक पाखण्ड तथा साम्प्रदायिकता, पूँजीवाद के बदले साम्राज्य, भूख, भाषा, प्रांत, मँहगाई, भ्रष्टाचार से लड़ती जनता की संघर्षगाथा तथा देश की दुर्दशा को दो टूक शब्दों में बयान करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए,
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिंदुस्तान है।
मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग चुप कैसे रहूँ
हर गज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।"[4]

15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। आजादी से जो उम्मीदें थी वह 1960 के बाद भी पूर्ण न होने से जनता का जनतंत्र से मोहभंग हुआ। इसी मोहभंग से उपजी राजनीतिक चेतना दुष्यंतकुमार के काव्य का मूलाधार है। जनतंत्र में तंत्र तो बदल गया लेकिन जनता का शोषण पूर्ववत ही बना रहा। अत: आम आदमी के लिए आजादी मजाक बनकर रह गयी। इसे अँधेरे-उजाले, जवाब-सवाल के माध्यम से अभिव्यक्त करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"इस अँधेरे में दीया रखना था,
तू उजाले में ही बाल आया है।
हमने सोचा था जवाब आएगा,
एक बेहूदा सवाल आया है।"[5]

आजादी के बाद जीवन भर त्याग, समर्पण तथा मूल्यों का निर्वहन करनेवाले नेताओं को दरकिनार कर तमाशबीनों ने अपनी राजनीतिक दुकानें खोली। जिससे राजनीति में अवसरवादिता तथा भाई-भतीजावाद पनपा। मूल्य विहीन राजनीति की पोल खोलते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"दुकानदार तो मेले में लूट गये यारों !
तमाशबीन दुकानें लगा के बैठ गए।"[6]

सत्ता सुंदरी की प्राप्ति के लिए किये जानेवाले समझौते, चरित्रहीनता, झूठे आश्वासन तथा दोगलेपन के माध्यम से जनता को गुमराह करनेवाले राजनेताओं एवं उनके अंध भक्तों पर प्रहार करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"रहनुमाओं की अदाओं पे फिदा है दुनिया
इस बहकती दुनिया को संभालो यारों।"[7]

आजादी के पश्चात आम और खास आदमी के बीच की दूरी बढ़ती गयी। स्वतंत्रता के 70 साल बाद भी इस देश का आम-आदमी रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी जरूरतों को पूर्ण करने में ही अपना जीवन खपा रहा है। भूख की समस्या को सुलझाने की अपेक्षा उसे बहस में उलझाए रखनेवाले राजनेताओं की वजह से ही इस कृषिप्रधान देश में रामजान की स्थिति है। दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है, जेरे बहस ये मुद्दआ।"[8]

सन 1970 के पश्चात मोहभंग की वेदना से उपजे विद्रोह ने विकराल रुप धारण किया। इस विद्रोह को कुचलने के लिए सरकार द्वारा 1975 में आपातकाल की घोषणा कर अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पर निषेध लगाए गये। सरकार के विरुध्द बोलना, लिखना गुनाह माना गया। जनतंत्र में जनता जनार्धन की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता की हो रही दुर्दशा को वाणी देते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"गूँगे निकल पड़े हैं, जुबाँ की तलाश में
सरकार के खिलाफ ये साजिश तो देखिए।"[9]

इस दौर में जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा देते हुए संवैधानिक मूल्यों को बचाए रखने के लिए, आपातकाल के विरुध्द आवाज उठायी। आपातकाल के अंधकार में जयप्रकाश नारायण रोशनदान बनकर जनतंत्र को बचाए रखने के लिए संघर्षरत रहे। जयप्रकाश नारायण के इस संघर्षमय जीवन को सलाम करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"सामान कुछ नहीं है फटेहाल है मगर,
झोले में उसके पास कोई संविधान है।
उस सिरफिरे को यों नहीं बहला सकेंगे आप,

Scanned with CamScanner

वो आदमी नया है मगर सावधान है।"[10]

आजादी के पश्चात मूल्यों का अवमूल्यन तीव्र गति से होने की वजह से ही आज का मनुष्य मूल्य संकट के दौर से गुजर रहा है। आज का मनुष्य नैतिकता को छोड़कर अनैतिकता के पथ पर दौड़ते हुए विनाश की ओर कदम बढ़ा रहा है। मानवीय संवेदनाएँ नष्ट हो जाने से वह जड़ बनते जा रहा है। पूँजीवादी- बाजारवादी व्यवस्था की इस लूट संस्कृति में अब आदमी ही आदमी को भूनकर खाने लगा है। इस नयी तहजीब की पोल खोलते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"अब नयी तहजीब के पेशे-नजर हम
आदमी को भूनकर खाने लगे हैं।"[11]

दुष्यंतकुमार ने सामाजिक विकास के मार्ग में अवरोध बनी रुढ़ियों, परम्पराओं पर प्रहार किया। साथ ही साम्प्रदायिक तथा धार्मिक पाखण्ड की पोल खोलते हुए जनता को जगाने का कार्य किया। धर्म की भूलभूलैया में जनता को भटकानेवाले तारणहार जनसेवकों के जनविरोधी चेहरे को बेनकाब करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"ये लोग होमों-हवन में यकीन रखते हैं,
चलो यहाँ से चलें हाथ जल न जाए कहीं।"[12]

भ्रष्टाचार स्वातंत्र्योत्तर भारत की एक प्रमुख समस्या रही है। जो लालफीताशाही की देन है। लालफीताशाही के चलते सरकारी योजनाओं की नदियों का पानी आम-आदमी तक पहुँच ही नहीं पाता। जनपथ से लेकर राजपथ तक फैली भ्रष्टाचार की कीचड़ में हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है। दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है,
हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है।"[13]

आजादी के पश्चात हर क्षेत्र में बढ़ती अराजकता, विषमता से इस देश की मूरत सँवरने की अपेक्षा बिगड़ती ही गयी। बंजर धरती, झुलसे पौधे, बिखरे काँटे, तेज हवा के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यथा-कथा को बयान करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"बंजर धरती, झुलसे पौधे, बिखरे काँटे, तेज हवा
हमने घर बैठे-बैठे ही सारा मंजर देख लिया।"[14]

आजादी के परचात इस देश को जन्नत बनाने का वादा करनेवालों ने उसे जहन्नुम से भी बदतर स्थिति में पहुँचा दिया। राजनीतिक अराजकता तथा आर्थिक-सामाजिक विषमता की खाई ने आम और खास आदमी के बीच की दूरी को चौड़ा किया। मानवीयता को दरकिनार कर धर्म के नाम पर अपनी स्वार्थ की रोटियाँ सेंकनेवालों ने साम्प्रदायिक तथा धार्मिक उन्माद को बढ़ावा दिया। जातियता, भाषावाद, प्रादेशिकता, साम्प्रदायिकता ने राष्ट्रीय एकात्मता के सामने कई प्रश्न निर्माण किये। ऐसी विषम स्थितियों में देश के भाग्यविधाता देशहीत को छोड़कर आत्महीत में लगे रहे। भ्रष्टाचार के चलते साम्राज्य से यह देश विश्व में मशहूर तो हुआ पर अपनी साख गँवा बैठा। आजादी के अंधकार में कुंभकर्ण की तरह गहरी नींद में सोयी हुई जनता को जगाकर अपनी सामाजिक प्रतिबध्दता को बखूबी निभाते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं,-

"तुम्हारे पाँवों के नीचे कोई जमीन नहीं,
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं।
मैं बेपनाह अँधेरे को सुबह कैसे कहूँ,
मैं इन नजारों का अंधा तमाशबीन नहीं।
बहुत मशहूर है आपें जरुर आप यहाँ,
ये मुल्क देखने के लायक तो है, हसीन नहीं।"[15]

इस मुल्क को पुन: अपने गौरवशाली शिखर पर पहुँचाने के लिए इस सड़ी-गली व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। दुष्यंतकुमार जनभावनाओं को बयान करते हुए कहते हैं,-

"हो गई है पीर पर्वत सी पीघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं, तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"[16]

अपनी गज़लों के शेरों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की आग जलानेवाले दुष्यंतकुमार ने अपने समसामयिक परिवेश को दो टूक शब्दों में बयान किया। अन्याय- अत्याचार के प्रतिकार के लिए दुष्यंतकुमार की गज़लों के शेर आज भी हमारा पथप्रदर्शन करते हैं। दुष्यंतकुमार की गज़लों के शेरों की लोकप्रियता एवं उसकी प्रासंगिकता को अधोरेखित करते हुए कार्तिकुमार जैन कहते हैं,- "दुष्यंत की गज़लों के शेर जैसे छक्का मारते चलते हैं और ये कविता की चाहरदीवारी के बाहर आकर झूठ, छद्म और अन्याय के घरों में रहने वालों की खिड़कियों के कांच फोड़कर घर के अंदर चले जाते हैं। शीशों के घरों में रहनेवालों को दुष्यंत के शेरों से खतरा होना स्वाभाविक है। दुष्यंत आज नहीं है पर शीशों के घरों में रहनेवाले लोग तो अभी भी है। शीशों के घरों में रहनेवाले लोग निश्चिंत न होने पाएं और उन्हें 'साये में धूप' के शेरों के ढेलों का

Scanned with CamScanner

हर बराबर बना रहे- दुष्यंत की ग़ज़लें अगर इतना करती हैं तो कुछ कम नहीं करती। आधुनिक कविता के इतिहास में इसमें हिंदी के साथ उर्दू कविता भी शामिल है, दुष्यंत जितना उद्धृत किया गया, कोई दूसरा कवि या शायर नहीं।"[17]

सारांश :

आजादी के बाद का मोहभंग, राजनेताओं की चरित्रहीनता, अवसरवादिता, भाई-भतीजावाद, जनतंत्र में उग आए जंगलतंत्र, आम-आदमी की अभावग्रस्तता, सामाजिक-धार्मिक पाखण्ड, साम्प्रदायिकता तथा संवैधानिक मूल्यों के पतन से सड़ी-गली व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन पर बल देती दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यथा-कथा की खतरनाक सच्चाइयों को दो टूक शब्दों में बयान करती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1) विचार धारा में, डॉ.एन.सिंह, पृ.27-28
2) साये में धूप : समकालीन सृजन संदर्भ, डॉ.पद्मा पाटील, प्रकाश माळी, पृ.40
3) समय संस्मरणों में (चर्चित संस्मरणों का विशिष्ट संग्रह)- कांतिकुमार जैन, चयन एवं संपादन- छबिल कुमार मेहेर, पृ.420
4) साये में धूप, दुष्यंतकुमार, पृ.57
5) वही, पृ.44
6) वही, पृ. 23
7) वही, पृ. 49
8) वही, पृ. 21
9) वही, पृ. 61
10) वही, पृ. 59
11) वही, पृ. 14
12) वही, पृ. 25
13) वही, पृ. 27
14) वही, पृ. 52
15) वही, पृ. 64
16) वही, पृ. 30
17) समय संस्मरणों में (चर्चित संस्मरणों का विशिष्ट संग्रह) कांतिकुमार जैन, चयन एवं संपादन- छबिल कुमार मेहेर, पृ.419

❑❑❑

30

वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक–शिक्षा की पाठ्यचर्या एवं शान्ति शिक्षा

अश्विनी कुमार पाठक
शोध छात्र, शिक्षा संकाय,
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

प्रोफेसर एन० पी० भोक्ता
शिक्षा संकाय,
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

सारांश (ABSTRACT)

मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ भी सीखता है वो सब कुछ शिक्षा के ही अंतर्गत आता है। प्रारंभ में शिक्षा की प्रक्रिया को द्विध्रुवी (एडम्स) माना जाता था जिसके एक तरफ अध्यापक और दूसरी तरफ विद्यार्थी था, किन्तु आगे चलकर यह प्रक्रिया त्रिध्रुवी(रायबर्न) हो गयी और इस तीसरे ध्रुवका स्थान पाठ्यचर्याने ले लिया। शिक्षा की प्रक्रिया मे, पाठ्यचर्या एक ऐसे पुल की भांति कार्य करता है जिसपर शिक्षक और शिक्षार्थी चलकर शैक्षिक लक्ष्य एवं उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं। यद्यपि पाठ्यचर्या को सदैव तीसरे ध्रुवकी संज्ञा दी जाती है तथापि यह स्वयं में एक जटिल, बहुआयामी और अनेकानेक गतिविधियों एवं क्रियाओं की संगठित रुपरेखा होती है। यह एक ऐसी धुरी है जिसके चारो ओर समस्त शैक्षिक व्यवहार और विविध क्रियाकलाप घूमते रहते हैं। इसी लिए पाठ्यचर्याविकास की प्रक्रिया को अत्यंत संवेदनशील कहा जाता है जिसके लिए एक वृहद् दार्शनिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। बात यदि अध्यापक–शिक्षा की पाठ्यचर्याकी हो तो विषय और

Scanned with CamScanner